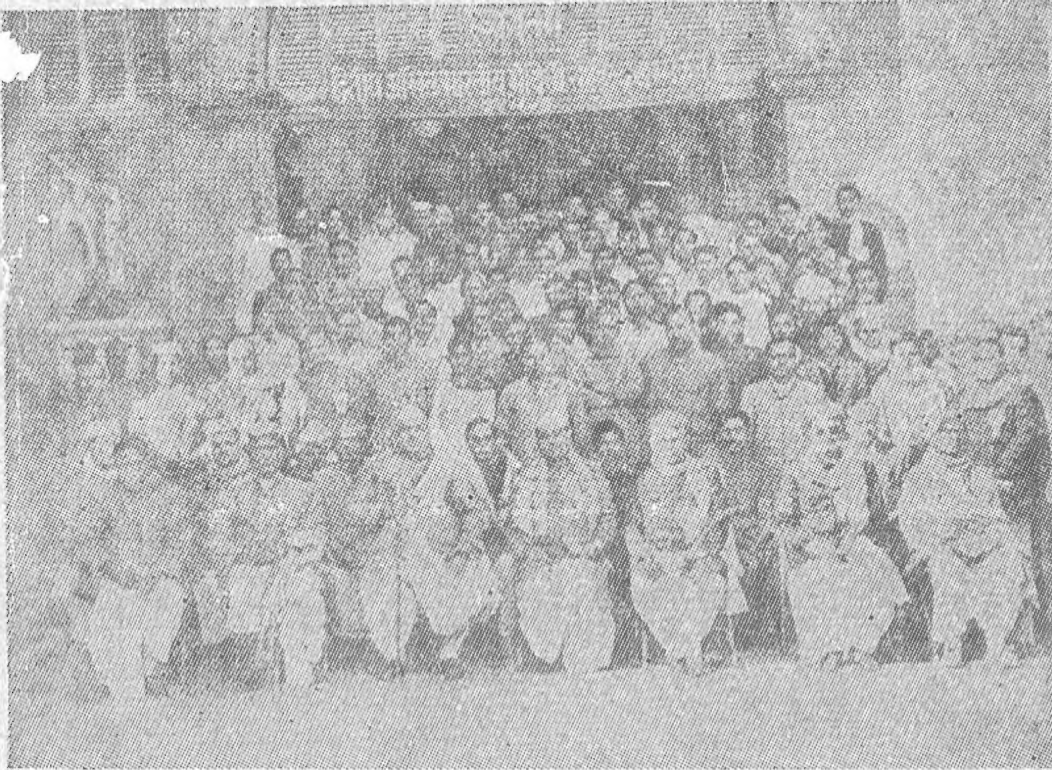


वैदेही

मैथिलीक सर्वोत्तम मासिक

प्रकाशनक ३६म वर्ष
२ रूप्य प्रति

वैदेही समिति
दरभंगा



वैदेही समिति द्वारा आयोजित

१० भा० मैथिली साहित्य सम्मेलन [1963] मध्य बाबू सत्यनारायण सिंह [अध्यक्ष],
पं० विनोदानन्द झा [मुख्य मंत्री] ओ महामहोपाध्यायड १० उमेश मिश्र
कुलपति, संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा [स्वागताध्यक्ष]

विहार सरकार द्वारा स्कूल, कॉलेज एवं
पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत

एक प्रति : २.००

वार्षिक : २०.००

आजीवन : २५१.००

संरक्षण : ५००.००

वैदेही

संस्थापक प्रेरणा : इन्द्र कान्त मिश्र (कुमार)

प्रो० श्री कृष्ण कान्त मिश्र द्वारा कुमार प्रिंटिंग प्रेस, दरभंगा से सम्पादित
मुद्रित एवं प्रकाशित ।

क्रम

एकांकी

अतिथि सम्पादक :

प्रियंवदा/नचिकेता/२८१

रमानन्द रेणु

कविता

मानव/डा० काञ्चीनाथ झा किरण/

ककरा-ककरा कहैत छैक हिमासय/कुलानन्द मिश्र/३०५

कथा

मार्च-अप्रैल, १९५६

दंड/डा० धीरेन्द्र नाथ मिश्र/३१४

छात्रोपयोगी

कथाक तत्त्व आ रचना विधान/प्रेम नारायण झा/३२०

मत-मतान्तर

प्राप्ति स्थान :

वैदेही समिति, दरभंगा

दूरभाष : २२३६

प्रियंवदा

(एकांकी)

□ नचिकेता

पात्र परिचय

प्रियंवदा : २५ वर्षक सुशिक्षित सुन्दर कन्या; परिधेय साड़ी; प्रथम कल्लोलमे हाथमे दू-एकटा पुस्तक, पत्र-पत्रिका; सुदृश्य पर्स; सुसज्जिता । प्रथम, द्वितीय आ तृतीय कल्लोलमे मुद्रित सिल्क अथवा सिथेटिक साड़ी-ब्लाउज; चतुर्थ कल्लोलमे गृहिणी जकाँ पोशाक — ललका वाढिक श्वेत-शुभ्र साड़ी आ सादा ब्लाउज; अंतिम कल्लोलमे करिया साड़ी-ब्लाउज आ केश खजल रहतनि । प्रथम कल्लोलमे सुदीर्घ केशराशि बान्हल आ बेणी-बद्ध रहतनि । दोसर कल्लोलमे गृहबधू जकाँ खोपा बनौने रहतीह ।

शर्व : ३०क आसपास आयु; ने बेसी दुब्बर-पातर, ने मोट; परिधेश— प्रथम आ तेसर कल्लोलमे शर्ट-पैट आ द्वितीय कल्लोलमे कुर्ता-पायजामा ।

मंचसज्जा

पूर्वाङ्कित : १ (i) धरिक फर्नीचरक अतिरिक्त एकटा ऐश-ट्रे, कैकटा पत्र-पत्रिका आ पुस्तक (टेबुल पर); कैकटा हैंगर (जे कि दरबज्जाक फ्रेम पर लागल कांटो पर लटकाओल जा सकैछ)— टेबुलक दराजमे राखल अछि ।

प्रथम कल्लोल

[मंचक सन्मुख-भागमे एकटा बॉक्स-टाइप टूल राखल अछि, जाहि पर शर्व अपन ठेहुन पर माथ घबने बैसल अछि । शर्व पर स्पाँट लाईट 'क' पड़ैत अछि । स्पाँट 'ख', 'ग' आ 'घ' क लऽग अन्हारे मे किछु लोक ठाढ़ रहैत अछि जे सभ आरम्भमे अदृश्य रहैत

अछि । 'ख'क लग एक-दोसरक बांहि पर हाथ धयने ठाढ़ अछि
एक पुरुष आ एक नारी । 'ग'क लग ठाढ़ अछि दू पुरुष आ दू
नारी । 'घ'क नौचाँ, सीढ़ीक ऊपर, चारि गोटे (युवक) ठाढ़ अछि ।]

पश्चस्वर : (नेपथ्य सँ) की सोचि रहल छह शर्व ? अपन शून्यप्राय बाँझ
जिनगी दऽ ? मुदा एतेक दुःखी, एतेक चिन्तित होइ' जोकर भेन
की छह तोहर तोस वर्षक जीवनमे ? (शर्व माथ उठवैत अछि
चिन्तित मुद्रामे; पश्च-स्वर प्रतिध्वनित होइछ) भेले की छह
तोहर जिनगीमे ? (शर्व उठि कऽ ठाढ़ होइत अछि) ... भेले
की छह तोहर जिनगीमे ?

शर्व : (शून्य दिस देखैत) सत्ये; तेहन दुःखद घटना भेले की छैक हमर
जीवनमे ? साँचे पूछ, तँ किछुओ नहि । गनऽ लागी तँ सभ किछु
भेटल छैक हमरा । देखियौक ने—

पश्चस्वर : रूप ! (स्वर प्रतिध्वनित होइत अछि ।)

शर्व : (आङुर पर गनैत रहैत अछि ।)

पश्चस्वर : विद्या !

शर्व : अस्ति ।

पश्चस्वर : बुद्धि !

शर्व : तीन ।

पश्चस्वर : शक्ति !

शर्व : बेस ।

पश्चस्वर : नोकरी !

शर्व : अवश्य ।

पश्चस्वर : सुखी शिशुकाल !

शर्व : (मोन पड़ैत) अहो !

पश्चस्वर : यौवन !

शर्व : (हँसैत) हँ ।

पश्चस्वर : मुदा, प्रियंवदा (प्रतिध्वनित होइत) प्रियंवदा... प्रियंवदा...

शर्व : (साश्चर्य-चकित) प्रियंवदा? (व्यथित स्वरें) प्रियंवदा नहि, हमरा आइ धरि नहि भेटल हुनक अभिज्ञान । नहि; वसंत एतेक बेर आयल आ भगनमने चलि गेल, मुदा हमर जिनगीमे कोनो प्रियंवदा नहि अयलीह । हमर पू जीकृत विद्या, बुद्धि, रूप, यौवन, शक्ति, शैशव—किछओ हमर आतप्त दिनमे, रातुक एसगरपनमे एक प्रियंवदाक अभाव केँ दूर नहि कऽ सकल । (दीर्घश्वास त्यागि) प्रियंवदा ! कतऽ छी अहाँ ?

पञ्चस्वर : (मंत्रोच्चारणक भगिनामे पढ़ैत अछि शब्दसभ प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि । नहुँए-नहुँए शर्व पुनः टूल-बाँवस पर बैसि जाइत अछि पहिलुका मुद्रामे । जा धरि श्लोक पठित हैत, स्पाँट 'क' हुनके पर रहैत छनि । अततोगत्वा नहुँए-नहुँए चारु स्पाँट बढ़ैत अछि, 'ख', 'ग' आ 'घ' कनेक मद्धिम आलोक दैत । प्रकाशित भऽ उठैत छथि पूर्ववर्णित नर-नारी—छओ गोटे एवं शर्वो ।)

अधरः किसलयरागः कोमल-विटपानुकारिणी बाहू ।

कुसुमम् इव लोभनीयम्, यौवनम् अंगेषु संनद्धम् ॥

तोहर ठोर पर किसलयक रक्तिमा छौ', कोमल वृक्षशाखा सन तोहर बाँहि; अंगमे तोहर यौवन छौ' सजात कुसुमे जकाँ लोभनीय ।

चलापांगं दृष्टि स्पृशसि बहुशो वेपथुमतीम् ।

रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णान्तिकचरः ॥

करं व्याधुन्यत्वाः पिबसि रतिसर्वस्वम् अधरम् ।

वयं तत्त्वान्वेषान् मधुकर ! हतास्त्वं खलु कृती ॥

हमर स्वप्नक मधुकर, छौ तोरे जीवन सार्थक—जे चंचल अपांग दृष्टिदे देखैत कामभएँ कँपैत स्वप्नसुन्दरी केँ छूबैत छैँ शत बेरि, हुनक कानक लगीच अनैत छैँ गुप्तमंत्रणा, हुनक उठैत हाथक घाघा केँ नहि मानि पीबैत छैँ हुनक रतिसर्वस्व अधरक रस । हाय, बृथा हमर मानव-जीवन जे नहि पाओल प्रिय केँ ।

[मच परक सभ क्यो मद्धिम प्रकाश सँ परिदृश्य मऽ जाइत अछि । दूर सँ गाड़ी, बस आदिक कोलाहल सूनल जाइत अछि । कोलाहल नहुँ-ए-नहुँ-ए तीव्र होइत विलीन मऽ जाइत अछि । अकस्मात् अनति-उच्च स्वर सँ सीढ़ी पर ठाढ़ चारि गोटे कोनो बात पर हँसि दैत अछि । शव चौकैत माथ उठा कऽ ओहि दिस देखैत अछि । ओसम हाथ-पयर हिलबैत अपना मे बात करैत आ हँसैत रहैत अछि, मुदा कोनो शब्द स्पष्ट सूनल नहि जाइछ । तावत नारी-कंठे 'नहि नहि, एना नहि' एवं पुरुष-कंठस्वरमे 'प्लीइज अनु'—एतबा सुनि कऽ शव चौकैत स्पाँट 'ख क नीचाँ अस्पष्ट आलाकमे ठाढ़ एकजोड़ स्त्री-पुरुष दिस देखैत अछि । ओहो सभ तत्पश्चात् बात करैत रहैत अछि मुदा बिना कानो शब्दक । अतमे स्पाँट ग' लग ठाढ़ चारि गोटे आपसमे 'चोर-पुलिस' खेलक गणना करैत देखल जाइत अछि । कने कालक लेल ओकरा सभमे सँ दू गोटेक गणना सूनल जाइत अछि—'Soldier, sailor, tinker, tailor, richman, poorman, beggarman, thie-eeeeef' एक-एक बेरक गणनामे एक-एक गोटे चोर बनि रहल छल । द्वितीय बेरक गणनाक बाद ओकरा सभक अगमगिमे मात्र दृष्टिगोचर होइत छेक, गणना सूनल नहि जाइत अछि । कनेक कालक बाद शव ओहू दिस सँ मुँह घुरा कऽ सोझाँ मुँह कऽ लैत अछि ।]

प्रियंवदा : [प्रविष्ट मऽ शवक लग सँ आगाँ कहैत अछि । प्रियंवदाक प्रवेशक सङ्गे मंग लाईटिंग जोन '२' मे मद्धिम प्रकाश पड़ैछ । स्पाँट 'क' मिझा जाइत अछि । प्रियंवदाक हाथमे दू-एकटा पोथीक सङ्गे घयल एकटा नोट-बुक आ पेन । शवक लग सँ आगू बढ़ि गेलाक बाद सीढ़ीक लग ठाढ़ चारि गोटेक दिस सँ सीटीक आवाज होइत अछि । प्रियंवदा तँ सुनिते थमिह जाइत अछि आ एम्हर-आम्हर देखैत ओकरा नजरि शव पर पड़ैत छेक । ओ घूरि कऽ

शर्वक दिस अगुआ जाइत अछि । शर्व पहिलुके जकाँ माथ झुकीने बैसल रहैत अछि । शर्व केँ नीक जकाँ निहुरैत ओकरा चारू दिस घुरैत प्रियंवदा पूछैत अछि ।] अहाँ हमरा सँ किछु कहलहुँ की ?

शर्व : (चौकैत, संकोचक स्वरमे) अ--अहाँ सँ ?

प्रियंवदा : हमरे सँ कहने हैब । (चारू दिस देखैत) एहि ठाम आन कयो अरक्षणीया तँ देखबामे आवैत नहिँ अछि जनिका देखि कऽ कयो मुँह सँ विचित्र ध्वनि बहार कऽ सकैत अछि ।

शर्व : मुँह सँ विचित्र ध्वनि ? केहन ध्वनि ?

प्रियंवदा : वौह जे श्याम भाइजी राधा बहीन-दाइ लेल बजबैत छलाह ।

शर्व : हिनका सभकेँ तँ श्याम भाइजी आ

प्रियंवदा : नह, अहाँक सङ तँ बाते करब (ताबत् दूर सँ पुनः ओ चारि गोटमे सँ-कयो सीटी बजबैत अछि ।) वौह, ओहने ध्वनि ।

शर्व : (हँसि दैत अछि) हम तँ कतबो प्रयास करब तँ हमरा सँ ओहन ध्वनि नहिँ बहार कयल हैत । नेनपने सँ तीन-चारिटा काज नहिँ सीखलहुँ, से एखनो तकर अफसोसे अछि : गुड्डी उडायब, साई-किम चढ़ब, गुल्ली-डंडा खेलब आ अहाँक भाइजी बला ई ध्वनि ..

प्रियंवदा : (आश्चर्य होइत) हमर भाइजी ?

शर्व : है, श्याम भाइजी !... (दुनू हँसि दैत अछि) आ राधा बहीन दाइ (पुनः हँसऽ लगैत अछि) ।

[ताबत् ओहि चारू गोट ओहि दिस सँ अबैत हिनका दुनूक लग सँ जाइत सुना-सुना कऽ गबैत छथि 'Happy days are here again, Thums up, Thums up' चारू निष्क्रांत होइत अछि ।]

लियऽ, अहाँ एकटा श्याम भाइजी दऽ कहैत छलहुँ, एम्हर तँ चारि-चारिटा छलाह ।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा क्षमा करब, हम वृथा अहाँकेँ टोकलहुँ ।

शर्व : हमरा तँ एहि लेल धन्यवाद देबाक चाही मोसकिल तँ ई अछि जे कयो हमरा टोकिते नहिँ अछि ताहि पर अहाँ सन ---

प्रियंवदा : (टोकते) प्रियंवदा हमर नाम ।

शर्व : ओऽऽ ! आ हमर नाम भेल शर्व ।

प्रियंवदा : शर्व ? तकर माने ?

शर्व : शर्व माने 'शिव' । जाहि सँ 'शर्वाणी' नाम बनैत अछि ।

प्रियंवदा : ओऽऽ, हँ । बंगाली सभमे ई नाम खब्र चलैत अछि—'शर्वाणी' नहि तँ 'शिवानी' ।

शर्व : मुझे, एकटा बात कहूँ : अहाँ एतऽ की कऽ रहल छी ?

प्रियंवदा : ई बात तँ हमरे अहाँ सँ पुछबाक छल ।

शर्व : हम तँ सभ दिन एहि ठाम रसारे वैसल खर्च करैत रहैत छी ।

प्रियंवदा : की ?

शर्व : यौवन, समय, जिनगी । आर की ? आ अहाँ ?

प्रियंवदा : हम तँ दिनभरिक काजक बाद क्लान्त भऽ एम्हर सँ शर्टकट करैत छी घुरबाक लेल ।

शर्व : शुदा हम तँ कहियो अहाँ केँ देखलहुँ नहि ।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा देखने तँ हैव, मुदा अपरिचयक कारणेँ

शर्व : सौन्दर्यक परिचयक कोन काज ? देखने रहितहुँ तँ आँकल रहैत छवि मोनमे ।

प्रियंवदा : (हँसैत) ई पहिल बेर सुनि रहल छी जे हम सुन्नरि छी । हमर समटा भाइ-बहीन सत्ये सुन्नर अछि आ हम ओहि सभमे सँ ककरो बराबरी नहि कऽ सकैत छी ।

शर्व : अबर : किसलयरागः कोमल-विटपानुकारिणी बाहू ।

कुसुमम् इव लोभनीयम् यौवनम् अगेषु संनद्धम् ॥

प्रियंवदा : मुनै'मे तँ नीक लागल मुदा संस्कृतक ज्ञान नहि अछि । तँ अर्थ नहि बुझलहुँ ।

शर्व : (मृदु हँसैत) अर्थ ?—तोहर ठोर पर किसलयक रक्तिमा छी' कोमल वृक्षशाखा सन तोहर बाँहि; अंगमे तोहर यौवन छी' संजात

—कुसुमे सन लोभनीय ।—यद्यपि कालिदास ई कहने छथि शकुंतला दऽ, तथापि ई एहि प्रियंवदो दऽ कहल जा सकैत अछि ।

[प्रियंवदा लंजा जाइत अछि । शर्न द्विधाग्रस्त स्वरें कहैत अछि ।]
अहाँ केँ बेजाय तँ नहि लागल ? हम अपन सीमा तँ पार नहि कऽ गेलहुँ ?

प्रियंवदा : (आरक्तिम मुँहें) नहि-नहि, से किएक ? अपन प्रशंसा सुनब ककरा नहि नीक लागैत छैक ?

शर्न : आव तँ पश्चिथ भेल ? देखब ! बिसरबाक क्षमते नहि रहल ।
(प्रियंवदा केँ निरुत्तर देखि) अच्छा, अहाँकेँ बहुत अबेर धरि रोकि रखने छी ।

प्रियंवदा : नहि-नहि, से नहि । तखन, घरक लोक तँ चितित हवे करत । अच्छा, तँ हम चलैत छी । भेट तँ बादमे हवे करत । नमस्कार ।
(हाथ जोड़ैत अछि ।)

शर्न : (हाथ जोड़ैत अछि बिनु किछु बचने । प्रियंवदाक प्रस्थानक सङ्गे जोन १-क प्रकाश मिझा जाइत अछि । स्पॉट 'क' शर्नक शरीर पर पड़ैत अछि । शर्न पुनः बैसि जाइत अछि । पुनः ट्राम-बसक शब्द सुनवामे आबैत अछि । स्पॉट 'ग'क लऽग ठाढ़ चारि गोटे चलि जाइत अछि आ स्पॉट 'ग' मिझा जाइत अछि । दूर कतहु गिरजाक घंटा ध्वनि बजैत अछि । स्पॉट 'ख' तऽर ठाढ़ प्रेमी युगल सेहो चलि जाइत अछि । ओतहु अन्हार भऽ जाइत अछि । शर्न हाफी लैत बजैत अछि ।) राति भेल । चलह शर्न सिन्हा ! अपन खोंतामे घुरि चलह । आजुक जीवन, आजुक कल्लोल एतहि शेष भेलह ।

[शर्न उठि कऽ ठाढ़ होइत अछि । मंच अन्हार भऽ जाइत अछि ।]

द्वितीय कल्लोल

[मंच पूर्ववत् । स्पॉट 'ख'क लऽग प्रेमी-युगल बैसल रहैत अछि । दू जोड़ नारी-पुरुष एहि बेर सीढ़ीक लऽग बैसल तथा क्यो ठाढ़ रहैत अछि ।

ओकरा सभ पर स्पॉट 'घ' क मद्धिम प्रकाश पढ़ैत छैक । शर्व अपन स्थान पर बैसल घड़ी देखि रहल अछि । दूरक गीरजामे आठ बजैत अछि । प्रियंवदा पहिबुके पोशाकमे प्रविष्ट होइत अछि । मात्र साड़ीटा दोसर पहिरने अछि ।]

शर्व : कहू, आजुक नव खबरि की ?

प्रियंवदा : 'विकस की गोली ली, खिचखिच दूर करो ।' (गबैत अछि ।)

शर्व : माने ?

प्रियंवदा : माने आइ जे मार्केटिंग सर्वे कयने छी, से मात्र 'विकस वेपोरब' क लेल । एतोक विज्ञापन, एतोक प्रचार आ खर्चक लाभ कतेक भेल अछि हमरा सभक मार्केटिंग रिसर्च व्यूरोकेँ सँह देखबाक कौन्ट्रैक्ट भेटल । आइसँ तँ हम सभ कैक गोटे जनता जनार्दनकेँ की पसिन्न छैक, तकर पता लगावऽ लेल निकलल छलहुँ ।

शर्व : तँ कतऽ-कतऽ गेल छलहुँ ?

प्रियंवदा : कतेको ठाम गेलहुँ, बेसी आबादी बला मोहल्ला सभमे ।

शर्व : तँ एहू बेर कोनो सहृदय महाशय भेटल छलाह कि?

प्रियंवदा : (हँसैत) एहि बेर एकटा घामे एकटा बहुत वयोवृद्ध व्यक्ति किछु बेसिए उत्साह प्रकट कयने छलाह हमरा सभक विषयमे । बेचारेक अति-उत्साह पर पानि फेरऽ पड़ल ।

शर्व : (कचकचाइत) जरदगवः !

प्रियंवदा : तकर अर्थ ?

शर्व : ओ किछु नहि, संस्कृतमे गारि देलहुँ । अहाँ ई कहू जे ओ बुढ़वा कयलक की ?

प्रियंवदा : जाय-दिअऽ ओ सभ बात ! ई कहू जे अहाँ दिन भरि की कयलहुँ ?

शर्व : प्रतीक्षा । कखन सँझका पहर आओत आ हमर झोड़ा भरि देत आनंदक अमोल निधिसेँ ।

प्रियंवदा : बाप् रे ! अहाँ सङ तँ बातो करब कठिने बुझाइत अछि ।

शर्व : किएक ? हमरा सन लोक नहि भेटैत अछि सर्वेमे !

प्रियंवदा : एखन धरि कोनो कविक दर्शन तँ सर्वे करैत काल नहि भेल ।

शर्व : भरिसक कविलोकनि हमराटा छोड़ि कऽ—अहाँ समके देखिते नुकायल रहैत अछि—अहाँ सभक मार्केटिंग ब्यूरो क वियो लोकनिक productक popularity-survey ने करऽ लागय एहि डरसँ ।

प्रियंवदा : (हँसि दैत अछि) ओना interesting होइत', नहि ? (किछु मोन पड़ैत) अरे अहाँसँ तँ सर्वेक मवाल सभटा पूछल जा सकैत अछि । देखैत छी ? एतेक दिन बीति गेल अहाँसँ प्रथम परिचयक, मुदा एखन धरि हम अहाँके अपन प्रश्नालीक experimentक खड़हा नहि बनौलहुँ अछि । थम्हू—(कहैत बेगमे सँ एकटा नोट-बुक आ पेनसिल बहार करैत अछि । एकटा चश्मा सेहो निकालि कऽ मास्टरनी जकाँ पहिरि लैत अछि) रेडी ?

शर्व : नहि, not ready; एक मिनट । (पाँकेट सँ रुमाल निकालि कऽ आन आँखिक ऊपर पट्टी बान्हऽ लगैत अछि ।)

प्रियंवदा : अरे,-अरे, ई की कऽ रहल छी ?

शर्व : (बिना जवाब देने पट्टी बाँन्हि कऽ) हँ, आब नीक भेल—पूछू !

प्रियंवदा : मुदा आँखि पर पट्टी किएक बान्हलहुँ ?

शर्व : अहाँके कोनो कविके खड़हा बनयवाक काजमे कनेक पागलपन तँ सहब्रेटा पड़त । मानि लिअऽ ई तेहने किछु थिक ।

प्रियंवदा : नहि-नहि, कहू ने ?

शर्व : कैंकटा कारण अछि । पहिल, जनता जनार्दन आन्हरे होइत अछि । बाजारमे उपलब्ध वस्तु सभटाक गुण-अवगुण, असल-नकल किछु नहि देखैत अछि, ने देखवाक क्षमता छैक । दोसर अहाँ सभ वस्तुक दाम बढ़ौने जाउ कतबो, ओ नहि देखत ओहि दिस, आ मे प्रतिवादे करत कथुकू लेल ।

प्रियंवदा : आ तेसर ?

शर्व : (हँसैत) अहाँ दिस देखब तँ उन्टा-सीधा जवाब देमऽ लागब । (मूढ)

हँसैत, गाढ़ स्वरमे). अहाँक दिस देखैत छी तँ सभ किछु बिसरि जाइत छी ।

प्रियंवदा : (लजबैत) बहुत भेल, आव ई नाटक बन्द करू आ पट्टी खोलि लिअऽ ।

शर्व : उँहूँ ! (माथ डोलबैत) आव तँ अहाँकेँ पूछै'टा पड़त ।

प्रियंवदा : थम्हू, तखन आर formal बनबैत छी । (बाहर जा कऽ एकटा केन चेयर मध्य भागक टूलक पाई आ एकटा रीडिंग चेयर स्पॉट 'ग'क लग रखैत अछि—अपने 'ग'क लग बला चेयर पर बैसैत अछि आ शर्व केँ हाथ धरैत उठा कऽ 'क'क लग बला केन चेयर पर बैसबैत अछि । कंठ केँ खखारैत पूछैत अछि ।)

अहाँक नाम ?

शर्व : शर्व सिन्हा ।

प्रियंवदा : पिताक नाम ?

शर्व : ताहि सँ कोन काज ?

प्रियंवदा : आह, जे पूछैत छी तकर जवाब दिअऽ ! बापक नाम ?

शर्व : योगन्धरायण ।

प्रियंवदा : की ? कोन नारायण ?

शर्व : कोनो नारायण नहि, योगन्धरायण ।

प्रियंवदा : माँक नाम ?

शर्व : अनामा

प्रियंवदा : ई केहन नाम भेल ? अवस्था ?

शर्व : ईहो कोनो प्रश्न भेल ? लिखि लिअऽ : आयु असीम ।

प्रियंवदा : अच्छा, तँ ई कहू : विवाहित कि अविवाहित ?

शर्व : विवाहित ।

प्रियंवदा : पत्नीक नाम ?

शर्व : प्रियम् ।

प्रियंवदा : (चौकैत लजबैत) संतानादि ?

शर्व : अस्तित्व नहि । संभावना प्रचुर ।

[प्रियंवदा लज्जित अछि ।]

अहाँ लज्जित किएक छी ?

प्रियंवदा : अहाँ कोना जानलहुँ जे हस...? तकर माने अहाँ सभटा देखि मूनि रहल छी पट्टीक अड्ड सँ ?

शर्व : अहाँक मुँहक सभटा रेखा स्मृतिमे छपल अछि, रेखा बढ़ल बुझबाक लेल देखबाक प्रयोजन नहि ।

प्रियंवदा : (बातकेँ टारैत) अच्छा, तँ ऐखन ई कहू जे अहाँ कोन टूथपेस्ट व्यवहार करै' छी ?

शर्व : नीमक डारि ।

प्रियंवदा : अहाँ भोरका चायमे कोन पत्तीक प्रयोग करै' छी—डबल डायमंड, रेड लेबल, ग्रीन लेबल, ताजमहल...?

शर्व : लस्सी ! - हम भोर कऽ लस्सी पीनेत छी ।

प्रियंवदा : दुपहरकऽ कोन ब्रांडक इन्सटेन्ट कॉफी...

शर्व : दूध, दुपहरमे ।

प्रियंवदा : नह, अहाँ हँस्सी कऽ रहल छी ।

शर्व : लिखि लिअऽ - बड्ड जल्दी बुझलहुँ !

प्रियंवदा : अच्छा तँ दोसरे प्रश्न करै' छी । ई कहू—अहाँ पत्नी प्रियम् सँ कतोक प्रेम करै' छी ?

शर्व : दू कनमा ।

प्रियंवदा : आधा किएक ? आ बाकी दू ?

शर्व : पहिलुका पत्नी सँ ।

प्रियंवदा : (उद्विग्न स्वरे) पहिलुका पत्नी माने ?

शर्व : सरस्वती ! कविक प्रथम प्रेम ।

प्रियंवदा : (निश्चिन्त भऽ) हूँ ! अच्छा कहू तँ प्रियमक लेल अहाँ कोन-कोन sacrifice कऽ सकैत छी ?

शर्व : भोर लस्सीक स्थान पर चाय, दुपहरकऽ दूधक स्थान पर कॉफी...! नीमक डारि फेंकि कऽ टूथपेस्ट... ।

प्रियंवदा : (प्रसन्न मऽ) तखन तँ ई अवश्य कहि सकै छी जे प्रियमक कहला पर जे परिवर्तन हैत, तदुपरांत कोन चाय, कॉफी वा टूथपेस्टक व्यवहार करब ?

शर्व : (हंसि दैत अछि आ आँखिक बँधन खोलि कऽ) अहाँ सत्ये जबरदस्त मल्लसमौन छी । बात केँ कतऽ सँ कतऽ लऽ अनलहुँ । सौह घूरि-फिरि चाय, कॉफी, टूथपेस्ट आ साबुन । (दुनू हँसऽ लागैत अछि ।)

प्रियंवदा : मुदा अहाँ हमर प्रश्नक उत्तर नहि देलहुँ ।

शर्व : हम सौह सभ वस्तुक व्यवहार करब जे अहाँ करैत छी । हमतँ ओहि सभसँ ईर्ष्या करैत छी ।

प्रियंवदा : ईर्ष्या किएक ?

शर्व : जे हम करऽ चाहै छी, मुदा कऽ नहि पबैत छी, ओ सभ तँ सौह करैत अछि ।

प्रियंवदा : से कोना ?

शर्व : (गंभीर स्वरमे) जे साबुन अहाँक शरीरकेँ छुबैत अछि, जे पेस्ट अहाँक अघर केँ चूमैत अछि, हमहूँ तकरे दिस झुकब यह स्वाभाविक छैक । (कहि कऽ हँसऽ लागैत अछि ।)

प्रियंवदा : (लजा कऽ) धत्त ! अहाँ बड्ड निर्लज्ज छी ।

शर्व : एहिमे निर्लज्जताक कोन बात भेल ?

प्रियंवदा : अच्छा, ई बाजू—एहि विषयमे अहाँक सिनियर मिस्टर दास की कहने छथि ?

शर्व : हमर सिनियर ? मिस्टर दास ?

प्रियंवदा : हँ, कालिदास ! (हुनू हंसि दैत अछि ।)

शर्व : हँ, हुनक एकटा सुन्दर वर्णन छनि जे हमर बातक सङ्ग मिलि जाइत अछि । दुष्यंत शकुन्तला केँ विरक्त करैत मधुकर दऽ कहने छथि :

चलापांगं दृष्टः स्पृशति बहुशो वैपयुमतीम्
रहस्याख्यायीव स्वनसि मृदु कर्णातिवधरः ।
करं व्याधुन्यत्वा पिबसि रतिसर्वस्वम् अधरम्,
वयं तत्त्वान्वेषान् मधुकर ! हतास्त्वं खलु कृती ॥

प्रियंवदा : अर्थ बुझा दिअऽ ।

शर्व : हो, हमर स्वप्नक मधुकर, छौ तोरे जीवन सार्थक— जे चंचल अपांग दृष्टिसँ देखैत कामभय कँपैत स्वप्नसुन्दरी केँ छूबैत छैँ शत बेरि, हुनक कानक लग-पास मनमनाइत छैँ गुप्तमंत्रणा, हुनक उठैत हाथक बाधाकेँ नहि मानि पीबैत छैँ हुनक रतिसर्गस्व अधरक रस । हाय, वृथा हमर मानव-जीवन (जे नहि पाओल प्रियकेँ ।)

प्रियंवदा : हाय ! कविक केहन अधःपतन ! कतऽ मनमनाइत मधुमाछीक प्रति ईर्ष्या आ कतऽ दूथपेस्ट, साबुन चायक पत्तीक प्रति ! [दुनू हँसऽ लागैत अछि । मंच अन्हार भऽ जाइत अछि ।]

तृतीय कल्लोल

[मंच पर टूल आ दूटा कुर्सी पूर्ववत् राखल । लाइटिंग जोन १, २ आ ३ पर मद्धिम प्रकाश । स्पाँटलाइट 'ग' जरि रहल अछि । शर्व आ प्रियंवदा एकटा रीडिंग टेबुल केँ उठबैत 'सावधान', 'कने ऊँच करू', 'हँ, एम्हर', 'ओतऽ राखू' कहैत-कहैत प्रविष्ट होइत अछि । ओकरा दुनूक प्रवेशक सङ्गे दुनूक ऊपर प्रकाश मद्धिमसँ तेज भऽ जाइत अछि । दुनूक सम्पूर्ण मंच पार भऽ कऽ स्पाँटलाइट 'ग'क लऽम राखल चैयरक एगो टेबुल धरैत अछि । शर्व दू-एक बेर टेबुल-चैयर पर बैसि कऽ सतोष बोध करैत अछि । प्रियंवदा कनेक कुर्सी पर जा कऽ बैसैत अछि ।]

प्रियंवदा : टेबुल तँ आवि गेल, आव ?

शर्व : आव की ? ताहि पर बैसि कऽ सभ दिन भरि राति अहाँ केँ पत्र लिखब ।

प्रियंवदा : (हँसैत) हमरा ? एतौक दिन लिखलहुँ से लिखलहुँ । भुदा आव तँ... विवाहक बादो ?

शर्व : एहन बहुतरास बात मोनमे उमरि अबैत छैक जकर प्रकाश वाणी सँ नहि कयल जा सकैछ, लिपिमे चाही तँ निबद्ध कऽ सकैत छी । सौह सभ बात जे अहाँकेँ कहि नहि सकब, कवितामे गाँथि लेब ।

प्रियंवदा : (हँसते) गँथबाक लेल टेबुलक कोन प्रयोजन ?

शर्व : (मृदु हँसते) विवाहक पश्चात् तँ जतऽ-जतऽ जा कऽ बैसब नहि, बैसि नहि सकब । तखन टेबुलेक दुनू दिस हाथमे हाथ धरने बैसल हम दुनू.....

प्रियंवदा : (हँसि कऽ) हाथमे हाथ धऽ बैसबाक लेल टेबुलक कोन प्रयोजन ? ओ तँ जेना पार्कमे बैसैत छलहुँ तहिना घरक सीढ़ी पर वा माटिऐ पर देवालमे ओठडि कऽ बैसि सकैत छी ।

शर्व : हम तँ पहिने कहलहुँ, नेनपन सँ हमरा तीनटा वस्तुक लेल बड्ड आकांक्षा छल । एक, रीडिंग टेबुल : शैशवक स्मृति सँ जड़ित । बाबूजी सभखन राति कऽ टेबुल-चेयर पर बैसि कऽ लिखैत रहथि बहुत किछु । ओ कहियो सार्थक कथाकार नहि बनि सकलाह प्रयासक अछैतो, मुदा हमरा एखने ओ प्रयास, ओहि अथक परिश्रम दऽ मोन अछि । राति कऽ निन्न कखनो जुहूँतीक लेल टूटैत छल तँ हुनका ओतहि देखैत छलहुँ । दिन भरिमे तँ हुनका देखिते नहि छलहुँ । छोट-छोट भाइ-बहीनक शिक्षा, विवाह आ पालनेक लेल खटैत-खटैत हुनक दिन बीति जाइत छलनि, हमरा लेल वा हमर निर्वाहक मायक लेल ओ समय नहि दऽ पर्वैत छलाह । आ राति कऽ साहित्य-सर्जनक भूत सवार होइत छल हुनका पर ।

प्रियंवदा : दोसर ?

शर्व : आर एकटा भेल स्टैंडिंग लैम्प : हमरा सभक बिछोनाक लऽग राखल रहैत छल । आ हमर बाबूजीक कथाक पहिल पाठिका अत्यंत आग्रहक सङ तकर आलोकमे अक्षर सभ परसँ सोत्साह दड़-बड़ मारैत छलीह, हमर माय । हुनका दृढ़ विश्वास छलनि जे हुनक पतिकेँ एक दिन एकटा महान साहित्यकारक रूपमे स्वीकृति भेटतनि । कखनो जखन हमरा निन्न टूटि जाइत अछि, हम ओहन स्टैंडिंग लैम्प तकैत छी ।

प्रियंवदा : आ तेसर ?

शर्व : एकटा बड़का हाथबन्ना ईजि चेयर : हमर दादाजी ताहि पर दिन भरि बौसल रहैत छलाह । हुनका चलै-फिरै'मे मोसकिल होइत छलनि । विश्वक लेल उत्सर्ग कयने छलथिन एकटा पयर, यौवनेमे । ते !

प्रियंवदा : विश्वक लेल ?

शर्व : (हँसैत) हँ, माने द्वितीय विश्वयुद्धक लेल ई हाल भेल छलनि । (थम्हैत) ओ हमरा अपन ईजि चेयरक हाथ पर बौसा कऽ दैत्य-दानव, राजकन्या-राजकुमार, राक्षस आ यक्ष, आकाशक देवता आ पातालक नागराज— ओहि सभक कथा सुनबैत छलाह । आ हम त्रिमोर भऽ दादाजीक मुँह सँ ओहि आश्चर्य दुनियाक खिस्सा सुनैत छलियनि ।

[किछुकाल दुनू चुप रहैत अछि ।]

हम पितामही केँ कहियो नहि देखलियनि, मुदा ओ एहि अभाव केँ बूझऽ नहि देलथिन । (चुप रहैत अछि ।) कतऽ गेल ओ दिन आ कतऽ हेरा गेल ओ सभ राति ? पता नहि ।

प्रियंवदा : ओ सभ दिन वा राति जँ नहि बीति जैतक तँ हमरा अहाँ कोना भेंटितहुँ ? ओ सुखक समय ओ सभ आनंदक दिन-राति बीति गेल ठीके, मुदा स्मृति सँ तँ अलोपित नहि भेल !

शर्व : ठीके कहलहुँ ! शैशव जँ स्मृतिमे बदलि नहि जाइत तँ प्रियंवदा कोना हमर शर्वाणी बनितथि ?

[प्रियंवदा प्रश्नक हँसी हँसैत अछि । शर्व उठि कऽ प्रियंवदाक दिस आगाँ बढ़ैत अछि । प्रियंवदा सेहो ठाढ़ भऽ कऽ हाथ बढ़ा दैत अछि । दुनू पर स्पाँट-लाईट 'क' पड़ैत छँक । एक-एक कऽ कऽ जोनल लाईट आ स्पाँट 'ग' मिझा जाइत अछि । दूर सँ विवाहक मंत्रोच्चारण तथा संस्कार-गीतक स्वर गूँजि रहल अछि । मंच अन्हार भऽ जाइत अछि ।]

चतुर्थ कल्लोल

[मंच अन्हारमे डूबल, मात्र स्पॉट 'ख' क लऽग ठाढ़ एकटा स्टैंडिंग लैम्प जरि रहल अछि । शर्व आ प्रियंवदा तकर नीचाँ माटि पर एक-दोसराक दिस पाछाँ घुरने बैसल किछु पढ़ि रहल अछि । स्टैंडिंग लैम्पक प्रकाशमे अम्पेस्ट रूप सँ रीडिंग टेबुल आ चेयर, टूल आ केन चेयर एवं पाछाँक प्लेटफार्म पर एकट फोल्डिंग खाट दृष्टिगत होइत अछि । शर्व कुर्ता-गयजामा एवं प्रियंवदा गृहवधू जकाँ पहिरने-ओढ़ने अछि ।]

शर्व : देखू तँ प्रियम् ई केहन लागैत अछि सुनै' मे ?—

प्रियंवदा : एक मिनट । एखन एकटा बहुत interesting कविता पढ़ि रहल छी । कनेक बादमे सुनब, प्लीज !

शर्व : कोन कविता एते' interesting लागल ? कने हमहूँ तँ सुनी !

प्रियंवदा : कनिएटा सुना रहल छी ओना तँ अहाँ पढ़ने हैब ।

ऋतुमती, प्रत्येक रातिकऽ

फुलगर भऽ उठू ओछाओन पर

गर्म मढ़ल अछि कविता सँ

प्रखर पहरा,

मलिछाह मलीदा ओढ़ि

कखन आवि जाथि महाराज,

आजीवन प्रतीक्षा तनिक ।”

सुन्दर अछि । ने ?

शर्व : हँ, सुदा हम जे कविता एखने लिखलहुँ, तकर तुलागमे ई कैक पंक्ति तत्तोक नीक नहि लागल ।

प्रियंवदा : तँ पढ़ू अहाँक कविता—शीर्षक की देलहुँ ?

शर्व : ‘दमयन्तीक उपदेश’ । सुनू—

“तीरक लऽग-पास पथरायल पड़ल रहैत अछि लोक-
निरंग अशक्त लोक ! घास-पात धैने रहैत अछि तकरा,
सेमारमे लपटल तक्षक बसातमे डोलि रहल अछि,
झोझमे झोकाह आगि सुनगि रहल अछि,

दमयन्ती, दमयन्ती—सुनसान जंगल सिहरि उठैत अछि,
 फूलपातक मध्य दऽ टूअर सुरुज टुघड़ैत अछि
 अत्यन्त सावधान भऽ—आलोक चीरैत अछि हिरण्यक पेट ।
 गाछ सभ उपदेश दैत अछि—
 एम्हर जाउ, ओम्हर घुनु, ओहि दिस देखू—
 दमयन्ती, दमयन्ती, जंगल जुनि पार होउ ?
 अन्हार मे ईशान दिस देहक दलाल अछि प्रतीक्षा करैत
 दमयन्ती, समय जुनि पारहोउ
 नैकृत कोन मे नुकामल छथि नलदेव ।
 दमयन्ती, मनुखक विश्वास जुनि करू
 ओ तँ अहाँ केँ लेत बान्हि कथा, कविता आर अकबाह सँ,
 अहाँ जंगल जुनि पार होउ,
 नहि तँ सभटा गाछ अहाँक शोकें आत्महत्या करत ।”

[चुप्प रहि कऽ]

कहू, केहने लागल ?

प्रियंवदा : (अमिभूत भऽ) सुन्दर ।

शर्व : मात्र ‘सुन्दर’ ?

प्रियंवदा : नहि, बहुत सुन्दर । मुदा आइ धरि एहि एक वर्षक बिवाहित
 जीवनमे अहाँक कविता मे विषादे पाओल । से किएक ?

[शर्व निरुत्तर रहैत अछि ।]

नल जे कि अपनोसँ बेसी दमयन्ती सँ प्रेम करैत छल अकस्मात्
 दमयन्ती केँ मात्र वृक्ष समक मरोसे सुनसान मयानक जंगलमे छोड़ि
 दैत अछि । जंगलक गाछ-बिरीछ दमयन्ती केँ मनुष्य केँ अवि-
 श्वास करब सिखवैत अछि । मयानक जंगल सँ बाट ताकि निकालि
 कऽ दमयन्ती बाहर बलियो जाय तँ ओतऽ देहक दलाल प्रतीक्षा
 करैत अछि । एना किएक ?

शर्व : जीवनकेँ हम जेहन षोलहुँ, जेहन देखलहुँ—तहिना कविता मे
 लिखैत छी ।

प्रियंवदा : एहन कोन विषाद अहाँक जिनगीकेँ विषाक्त कयने अछि जे कविता मे यौवन, उच्छ्वास, आनंद, आलोक आर जीवन रहिते नहि अछि । मात्र जरा निरानंद, अविश्वासक, अंधकार आ मृत्युमये किएक ? शर्व केँ (निरुत्तर देखि) बाजू मे ? एहन की देखलहुँ जीवन मे ? (शर्व तैयो चुप रहैत अछि से देखि कऽ) बाबूजी, माँ वा दादाजी तँ अहाँक नेनपने मे स्वर्गवासी भऽ गेल छलाह । ताहि लेल जे कष्ट करऽ पड़ल तकर दुःख, तकर अपमान तँ हम बुझैत छी । मुदा ताहि लेल गर्भीर विषादेक कविता लिखवा मे हमरा विश्वास नहि होइत अछि ।

शर्व : जे किछु हम देखलहुँ--सहलहुँ आ कयलहुँ, से अहाँ सोचि नहि सकैत छी ।

प्रियंवदा : संह तँ हम जानऽ चाहैत छी—(प्रश्नाकुल-दृष्टिँ देखत)

शर्व : कहलहुँ तँ ? (धीरे)

प्रियंवदा : कहाँ किछु कहलहुँ ?

शर्व : (ठाढ़ होइत) बम्, ओतवे कहि सकैत छी ।

[मंच अकस्मात् सम्पूर्ण आलोकित भऽ उठैत अछि ।]

प्रियंवदा : (उठि कऽ) से किएक !

शर्व : प्लीज प्रियम्, हमरा आर किछु नहि पूछू ? (शर्वक मुख पर अस्वामाविकताक छाप दृष्ट होइछ ।) प्लीज ! (प्रियंवदाक प्रश्न आ असंतोष केँ बुझैत) एहन किछु बात होइत छैक जाहि दऽ पूछल नहि जाइत छैक । सहिएँ पूछल जाय तँ मंगल ।

प्रियंवदा : (रीडिंग टेबुल लग जा कऽ टेबुल पर झुकि कऽ ठाढ़ होइत अछि चिंतित मुहें स्वगतोक्ति जकाँ) मोनक एहन कोनो दरबज्जा अछि जाहि परक ताला समक लेस नहि खुजैत छक । (शर्व केँ निरुत्तर देखि) मुदा हमरो लेल नहि ? (शर्व तैयो चुप रहैत अछि ।) शर्व !

शर्व : (व्यथित स्वरे, दर्शकक दिस देखैत प्रियंवदाक दिससँ सुँह घुरा कऽ) हँ प्रियम् । (प्रियंवदाक टख लग अनुवा)

प्रियंवदा : हमरा आ अहाँक बीचमे ई कोन देवाल अछि, शर्व ! हम दुनू मिलि कऽ एकरा ढाहि नहि सफत छी ?

शर्व : (दुनू आँखि के झाँपैत) नहि प्रियम् ।

[प्रियंवदा अवाक् विस्मय भरल आँखिएँ देखैत रहि जाइत अछि । नहुएँ-नहुएँ एक-एक कऽ कऽ मंचक जोनल लाईट मिझा जाइत अछि । मात्र स्पाँट 'ख' शर्व पर आ स्पाँट 'क' प्रियंवदा पर पड़ैत छैक ।]

प्रियंवदा : शर्व !

[शर्व निःशब्द भऽ कानैत अछि दुनू हाथें मुँह झाँपने । मंच अन्हार भऽ जाइत अछि ।]

पंचम कल्लोल

[मंच पूर्ववत् । शर्व शर्ट-पैट पहिरने आ प्रियंवदा बाहरक पोशाकमे, केश खुजल । शर्व केँ विकृत आ क्लान्त देखा रहल अछि । शर्व सीढ़ी पर बैसल अछि । ओकरा पर स्पाँट 'ख' पड़ैत छैक । प्रियंवदा प्रविष्ट होइत अछि । सङे जोन १ प्रकाशित भऽ उठैत अछि । शर्व आ प्रियंवदाक मध्य अन्हार रहैत अछि ।]

प्रियंवदा : शर्व ! (चुप्प देखि) प्लीज ! हमरा क्षमा कऽ दियऽ ! काल्ह राति हमर भैया आ' भौजीक सोझाँ अहाँ केँ हम..... (थम्हैत) विश्वास करू, हम जानि-बुझि कऽ किछु नहि कयलहुँ ! (शर्वक मुहैठमे कोनो प्रतिक्रिया नहि होइत छैक ।) आ ताहि लेल अहाँ आइ दिन भरि ने खयलहुँ, ने पीलहुँ, ने ऑफिस गेलहुँ ! (शर्वक दिस आगाँ बढ़ैत अछि । लाईटिंग जोन २ सेहो आलोकित भऽ उठैछ । शर्वक लग जा कऽ) एत्तेक दूर धरि जे अहाँ हमरा सँ बाजबो नहि कयलहुँ । (झुकि कऽ शर्वक हाथ धरैत अछि, मुदा शर्व हाथ बढ़यबाक, भरबाक वा छोड़ि देबाक कोनो प्रयास नहि करैत अछि ।) नित्तहु

भोर कऽ निम्न सँ उठबाक बाद अहाँ हमरा दिस देखि कऽ मृदु हँस
छी । आइ ताहू सँ हम वंचित रहि गेलहुँ । किएक ? कहू ने !
(शर्व तैयो चुप रहैत अछि ।) काल्ह राति जे पहिरना पहिरने
छलहुँ, सँह पहिरि कऽ सूति गेलहुँ आ आइ दिन भरि सँह पहिरने
छी ! हमरा पर तमसा कऽ अपने पर किएक अत्याचार कऽ रहल
छी ? (शर्व तैयो किछु नहि बजैत अछि । प्रियंवदा दोसर हाथ
सँ शर्वक मुँह अपना दिस घुरबैत अछि । शर्व शून्य-दृष्टि देखैत
अछि) कहू, की कयने अहाँक तामस ठंडा हैत ? कोना हम अपन
अपराधक प्रायश्चित्त कऽ सकैत छी ? (शर्व निरुत्तर रहैत अछि)
कहलहुँ तँ अन्याय कयने छी हम । (शर्व केँ छोड़ि मंचक सम्मुख-
भागमे आवैत अछि । शर्व ओहिना एक्के दिस देखैत बैसल रहैत
अछि । पुनः शर्व पर स्पॉट 'घ' आ प्रियंवदा पर स्पॉट 'ख' पड़ैत
अछि) हमरा की भऽ गेल छल से हम नहि कहि सकैत छी ।
जखने पता चलल जे हमरा सँ पहिनो आर एक गोटे अहाँक
जिनगीमे आयल छलीह, तखन अपना केँ सम्हारि नहि पोलहुँ ।
कन्नारोहट कऽ कऽ एकटा scene ए create कैलहुँ । पता नहि
भैया आ भौजीओ हमरा दऽ की सोचलथिन ? पहिल तँ ई जे
हमरा दुनूक विवाहित जीवनमे कोनो सुख-शान्ति नहि अछि । हमहीं
जानै' छी ई कत्तोक फूसि धारणा अछि ! मुदा ओ सभ तँ हमरा
दुनूक जीवनक प्रत्येक मुहूर्त केँ देखैत नहि छथि । तेँ हुनका सभ
केँ कोना खबरि रहतनि केहन सुखस्मृति सँ भरल अछि हमरा सभक
जीवन-? दोसर बात ओ सभ ई अवश्य सोचने हैताह जे हम अहाँ
सँ प्रेम-विवाह कयलहुँ, जाहि लेल ओ सभ कहियां मना नहि
कयलनि । मुदा प्रेम-पर्व चलल एत्तोक दिन धरि आ तैयो हमरा ई
नहि पता लागल जे अहाँक विवाह पहिने भऽ गेल छल आ ओहि
विवाह सँ संतानादि सेहो भेल छल ? ई हुनका सभ लेखें आश्चर्य-
अनक लागल हेतनि । यह सभ बात हमरा पागल बना देने छल ।

आ' तँ हम — (कहैत शर्क दिस घुरैत अछि । ओ तँयो बिनु प्रति-
क्रियाक बैसल रहैत अछि भोथ दृष्टिअँ प्रियंवदा दिस देखैत । प्रिय-
वदा चुप्प भऽ टेबुल-चेयरक लग जाइत अछि; सङे-सङे स्पाँट 'ग'
जरि उठैत अछि । ओतऽ सँ स्टैंडिंग लैम्पक लग जाकऽ स्वीच दबा
कऽ लैम्प केँ ऑफ-ऑन करैत रहैत अछि, कैक बेर तीन-चारि बेर
जरा-मिझा कऽ मिझायल छोड़ि दैत अछि । सङे-सङे स्पाँट 'ख'
जरि उठैत अछि स्टैंडिंग लैम्पक ऊपर । तत्पश्चात् पाछाँ प्लेटफार्म
पर चढ़ि कऽ फोर्लिंग खाट पर बैसैत अछि । जीनल लाईट 'इ' जरि
उठैत अछि मद्धिम प्रकाश दैत । एकटा रोटेटिंग डिस्क लैम्प सँ
सम्पूर्ण मंच पर सँ आलोक आ अन्हारक देव बहि जाइत अछि ।
नेषथ्य सँ pre-recorded चारिटा स्वर सुनना जाइछ — शर्व,
प्रियंवदा, भैया आ भौजीक —) ।

शर्व : अहाँ केँ हम अपन जिनगीक सभटा पन्ना किएक पढ़ऽ देब ? (प्रति-
ध्वनिमे 'किएक ?' 'किएक' ? 'किएक' ?) एहन बहुत घाव रहैत
अछि मनुक्खक जीवनमे जे दोसर जीवनमे तकरा बहि लाबी
तँ मंगले...

भौजी : तोरो किएक जिद्द चढ़ल छी' प्रियम् ? सभक सभटा बात जानैटा
पड़तीक ?

प्रियंवदा : (क्रुद्ध स्वरें) सभक सभटा बात ? 'सभ' के ? हम तँ सभकेँ ई प्रश्न
करैत नहि जा रहल छी ? हम तँ अपन प्रेमी, अपन पति सँ ई
प्रश्न पूछि रहल छी । तोंही एत्तेक जिद्द 'किएक' करैत छह ?

भैया : (बुझैबाक प्रयास करैत) मुदा प्रियम्, एत्तेक दिन भऽ गेलाक बादो
जखन शर्व तोरा किछु नहि कहलथुन तकर अर्थ ई जे ओ नहि कहऽ
चाहैत छथि ।

शर्व : (बातक सङे सङे चरैत प्लेट, छूरी, चम्मच पटकैक शब्द, कुर्सो
घिसिआबैक शब्द सेहो — जेना शर्व तमसा कऽ भोजन पर सँ उठि
रहल अछि) हँ-हँ, हम नहि कहऽ चाहैत छी ? की कऽ लेब
अहाँ सभ ? हकरा फाँसी पर चढ़ा देब ? तँ दियऽ !

प्रियंवदा : (चीत्कार करैत) थम्हू ! अहाँ के लाज नहि होइत अछि—घरमे बजा कऽ भैया-भोजीक अपमान कऽ रहल छी ?

शर्व : (ततोधिक उत्तेजित भऽ) अहाँ चुप रहू ! हम सभटा बुझैत छी, अहाँ लोकनि मिलि कऽ हमरा विरुद्ध षड्यंत्र कऽ रहल छी । हमर अतीत केँ कब्र सँ खोधि कऽ बहार करबाक चेष्टा कऽ रहल छी । ऐँ ... ? (हँसैत) हमरा की बुझिबक बुझै' छी ।

भैया : मुदा शर्व, हमरा सभकेँ अहाँ गलत बुझि रहल छी ।

शर्व : आब हम सभकेँ चीन्हि गेलहुँ, ककरो विश्वास नहि !

प्रियंवदा : हे ईश्वर ! अहाँकेँ हमरा पर विश्वासो आब नहि रहल ?

शर्व : विश्वास ? उँ ? (जोर जोर सँ अस्वाभाविक स्वरे हँसैत) किएक करू विश्वास अहाँक ? आब हम ककरो विश्वास नहि करै' छी (प्रतिध्वनित होइत अछि 'ककरो नहि', 'ककरो नहि') ।

प्रियंवदा : जहनुममे जाउ अहाँ आ धहाँक अतीत ! जखन विश्वासे नहि रहल तँ रहल की ? हमरा अहाँ सँ कोनो सम्बन्ध नहि ... ।

शर्व : (अट्टहास करैत) कोनो सम्बन्ध नहि रहल ? ऐँ ? (हँसैत) अहाँ तँ देखैत छी दक्षा सँ आर ऊँच दर्जाक शैतान छी ।... विश्वास... सम्बन्ध ...सभ समाप्त ?

प्रियंवदा : के दक्षा ? के लागैत अछि ? ओ अहाँक ?

शर्व : (अट्टहास) 'के लागैत अछि ?' नहि 'के लागैत छल ?' कहू ! ओ अहीं सन 'प्रियम् वदेत्' छल, मुदा दू-दूटा संतानक जन्म देलाक बादो छल कामताड़ित शिकारी कुकूर जकाँ; कतेकोक जिनगी नष्ट कयलक ...ने राखलक विश्वास, आ ने सम्बन्ध ! तेँ एक दिन हम ओकर हाथ-पयर बान्हि कऽ ओकर कंठ दबा कऽ ...

प्रियंवदा : (डरें चीत्कार करैत, स्पष्ट प्रतीत हैत जे शर्व हुनक कंठ दबा रहल छल) आः, आ-आ, क्-की कऽ रहल छी ? छ् छोड़ू... (शर्व पागल जकाँ हँसैत रहैत अछि । भैया आ भोजीओ चीत्कार करैत छथि प्रियंवदा केँ छोड़बाक लेल ।)

शर्व

(हुनका सभक चीत्कारक सडै सड पागल जकाँ चीत्कार करैत हँमैत अछि) एहि बेर हम नहि छोड़ब ! खतमे कऽ देब अविश्वासक जड़ि केँ... खतमे कऽ देब... (हँमैत-हँसैत कानऽ लगैत अछि) ई-ई की कऽ रहल छी हम ? ई हम... (पागल जकाँ भोकासी पाड़ि कऽ कानऽ लगैत अछि ।)

[आलोकक देब बंद भऽ जाइत अछि । मंच पर प्रकाश पूर्ववत् । शर्व सीढ़ी पर आ प्रियंवदा पहिलुके जकाँ खाट पर बैसल रहैत अछि]

प्रियंवदा : शर्व ? अपन प्रियमक दिश नहि देखब ? कलहुका ओहि एक मुहूर्तक झगड़ा आ विच्युति ए असल भेल, आ हमरा दुनूक एतेक दिनक प्रेम किछु नहि ?

[शर्व चुप रहैत अछि । प्रियंवदा शर्वक लग जा कऽ सीढ़ी पर बैसैत अछि । कोमल स्वरें शर्वक नाम चिकरि शर्वक हाथ अपन हाथमे लैत अछि । अत्यन्त ममत्वक दृष्टिँ शर्वक दिस देखैत अछि एवं ओकर केश पर हाथ फेरैत रहैत अछि । ओकरा दुनू पर स्पॉट 'घ' तीव्र रूपें पड़ैत छैक । बाँकी सम्पूर्ण मंचमे अन्हार । कनेक कालमे मंच पर अस्पष्ट प्रकाशमे दू-तीन गोटे आबैत अछि एवं एक-एक कऽ स्टैंडिंग लैम्प, केन चेयर, रीडिंग चेयर, रीडिंग टेबुल, आ फोल्डिंग काँट लऽ जाइत अछि । प्रकाश मात्र टूल पर आ सीढ़ी पर बैसल शर्व आ प्रियंवदा पर पड़ैत अछि । प्रियंवदा क्रन्दनक स्वरमे पुछैत अछि]

शर्व, हमर शर्व ? आब की कहियो अहाँ अपन प्रियम् सँ बात नहि करब ? नलदेवे जकाँ अपन दमयन्ती केँ छोड़ि देब एसगरे पथक खोज करब ? आब कहियो कि कविता नहि सुनायब अपन ? (शर्व केँ निस्तेज निश्चुप देखि) हमरा नहि विश्वास होइत अछि अहाँ दऽ ओसभ जे किछु कहलनि । अहाँ कोना दक्षाक हत्या कऽ सकैत छी ? ई कोना भऽ सकैछ जे अहाँ अपन प्रेम-प्रीति-ममता सँ जे दुनू संतानक जन्म देने छलियेक ? ओहि दुनू केँ निर्मम रूपें एहि दुनिया सँ हटा

देलियेक ? नहि-नहि, अहाँ एतोक निष्ठुर नहि भऽ सकै छी । ओसभ जे खुशी कहथु, हम नहि मानैत छी ।

[एतबामे एकटा एम्बुलेन्सक साईरेन ध्वनि सुननामे अबैत अछि — दूर सँ बल आवि जाइत अछि । प्रियंवदाक मुँह पर शंका आ आतंकक चेन्ह स्पष्ट प्रतीत होइत अछि । ओ बुझैत अछि जे मानसिक अस्पताल सँ शर्मा केँ लेबाक लेल एम्बुलेन्स आयल अछि । मुदा वास्तवमे से मानवाक लेल तैयार नहि छल । दू गोटा डाक्टर हाउस-कोट पहिरने मंच पर प्रविष्ट होइत अछि । मुदा ताहि सँ पहिने गाड़ी दरबज्जा खोलबाक आ वन्द हेबाक शब्द एवं दू व्यक्ति चलि कऽ अयबाक पदध्वनि पदचध्वनिक रूपमे सुनवामे आवैत अछि । प्रत्येक शब्दमे प्रियंवदाक आतंक बढ़ैत रहैत अछि । शर्मा केँ मानसिक अस्पतालक डाक्टर लग जयबाक प्रयास करैत अछि । ई देखि कऽ प्रियंवदा अपना केँ सम्हारि नहि पवैत अछि आ चीकरि उठैत अछि ।]

न-अ-अ-अ-हि ! कतऽ लऽ जा रहल छी अहाँ लोकनि शर्मा केँ ? नहि, नहि — ओ पागल नहि छथि । ई फूसि अछि जे ओ कहियो पागल रहथि । ई सरासर झूठ बात केँ ओ ककरो हत्या कयने छथि । नहि, नहि, हमर शर्मा एहन नहि भऽ सकै छथि । नहि, छोड़ि दियऽ अहाँ लोकनि हुनका !

[ओ सभ किछु नहि कहैत अछि । प्रियंवदा सँ शर्मा केँ छोड़ा कऽ दुनू दिस सँ उठा कऽ चलऽ लागैत अछि । प्रियंवदा कानैत बाधा दैत आगाँ बढ़ैत अछि दू डेग आ थम्हि जाइत अछि । नेपथ्य सँ कविता-पाठक स्वर भासल अबैत अछि ।

“तीरक लग-पास” दमयन्ती, दमयन्ती जंगल जुनि पार होउ !”

[अन्तिम पंक्ति प्रतिध्वनित होइत रहैत अछि । प्रियंवदा शून्य दृष्टिएँ देखैत रहैत अछि । मंच अन्हार भऽ जाइत अछि ।]